

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मोक्ष, सत्र 5, चुनाव, ऐतिहासिक पुनर्ज्ञान

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन और मोक्ष पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 5 है, चुनाव, ऐतिहासिक पुनर्ज्ञान।

हम मोक्ष पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं।

हम चुनाव के सिद्धांत की खोज कर रहे हैं। सृष्टि से पहले परमेश्वर ने लोगों को उद्धार के लिए चुना। और हम अपने ऐतिहासिक सर्वेक्षण को जारी रख रहे हैं।

हमने ऑगस्टीन, पेलागियस और मार्टिन लूथर के बारे में बात की है। अब हम जॉन कैल्विन की ओर बढ़ते हैं। हालाँकि जॉन कैल्विन ने 1509 से 1564 तक मेलानक्थन का सम्मान किया, लेकिन नेतृत्व के मामले में लूथरन सुधार में लूथर के उत्तराधिकारी और प्रतिभाशाली यूनानी प्रोफेसर को याद करते हैं, लेकिन जिसने ऑगस्टीन के अनुग्रह और पूर्वनियति के सिद्धांतों को कमजोर किया, उसने लूथर को कमजोर कर दिया।

मेलानक्थन ने लूथर के अनुग्रह और पूर्वनियति के सिद्धांतों को कमजोर कर दिया। हालाँकि, 1509 से 1564 तक कैल्विन ने मेलानक्थन की विद्वत्ता के लिए उसका सम्मान किया और उसे मसीह में भाई के रूप में माना, लेकिन उसने उसके सहक्रियावाद पर सवाल उठाया और लूथर के एकेश्वरवाद को प्राथमिकता दी। जिनेवा के सुधारक कैल्विन ने खुद को एक ईसाई-केंद्रित धर्मशास्त्र का निर्माण करने के लिए बाइबिल की व्याख्या के लिए समर्पित कर दिया।

कैल्विन बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वह एक अनिच्छुक पादरी थे, लेकिन कई सालों तक एक ऐसे शहर में एक वफादार पादरी रहे, जहाँ उन्हें कई लोगों द्वारा अपमानित और अपमानित किया गया था। विद्वत्ता के संदर्भ में उनकी आजीवन गतिविधियाँ उनके इंस्टीट्यूट्स ऑफ़ द क्रिश्चियन रिलीजन, एक व्यवस्थित धर्मशास्त्र पुस्तक, को लिखना था, जो कि 27 साल की उम्र में एक युवा व्यक्ति के रूप में शुरू हुई, जिसने उन्हें प्रसिद्धि दिलाई, और फिर अंतिम 1564 इंस्टीट्यूट्स तक आवर्ती सुधार और विस्तार में, जिसमें उन्होंने हमें ईसाई धर्म की अपनी निश्चित समझ दी।

और दूसरा काम, फिर से, उन्होंने हर दिन उपदेश दिया और सिखाया और बहुत सारे पादरी कार्य किए, लेकिन दूसरा काम, संस्थानों के लेखन और इसके सुधार और विस्तार के साथ-साथ, उनकी बाइबिल की टिप्पणियाँ थीं। उन्होंने नए नियम की हर किताब को लिखा, सिवाय प्रकाशितवाक्य के, जिसे वे स्वीकार नहीं कर पाए, और दूसरा और तीसरा यूहन्ना, जो कम महत्व के थे, उन्होंने पहला यूहन्ना लिखा। और पुराने नियम पर टिप्पणियाँ, वह यहजेकेल के बीच में ही मर गए। अन्यथा, हमारे पास शायद पुराने नियम के लिए टिप्पणियों का एक पूरा सेट होता।

जिनेवा के सुधारक कैल्विन ने खुद को बाइबिल की व्याख्या के लिए समर्पित कर दिया ताकि एक मसीह-केंद्रित धर्मशास्त्र का निर्माण किया जा सके। उन्होंने ईश्वर की संप्रभुता पर जोर दिया और

चुनाव के एक मजबूत सिद्धांत को विकसित किया। कैल्विन ने अपने प्रसिद्ध ईसाई धर्म के संस्थानों में पूर्वनि्यति पर अपने विचार व्यक्त किए, उद्धरण, इसलिए, पवित्रशास्त्र के स्पष्ट सिद्धांत के अनुरूप, हम दावा करते हैं कि एक शाश्वत और अपरिवर्तनीय परामर्श द्वारा, ईश्वर ने एक बार सभी के लिए निर्धारित किया है कि वह किसे उद्धार के लिए स्वीकार करेगा और किसे विनाश की निंदा करेगा।

संस्थान, पुस्तक 3, अध्याय 21, खंड 7. विरोधियों ने चुनाव और स्वतंत्र इच्छा पर कैल्विन के विचारों पर हमला किया, और उन्होंने स्वतंत्र इच्छा के बारे में, 1543, और ईश्वर के शाश्वत पूर्वनिर्धारण के बारे में, 1552 के साथ जवाब दिया, जो मेरे अनुमान में उल्लेखनीय है क्योंकि यह चुनाव के बारे में लगभग हर समकालीन आपत्ति का जवाब देता है जिसके बारे में मैंने कभी सुना है। और उन्होंने यह 16वीं शताब्दी के मध्य में किया था। कैल्विन ने ऑगस्टीन के धर्मशास्त्र के प्रति अपने ऋण को स्वीकार किया "अगर मैं ऑगस्टीन से एक पूरी मात्रा बुनना चाहता था, तो मैं अपने पाठकों को आसानी से दिखा सकता था कि मुझे उनकी भाषा के अलावा किसी अन्य भाषा की आवश्यकता नहीं है।"

संस्थान, 3, 22, 8. पुस्तक 3, अध्याय 22, पैराग्राफ 8. कैल्विन की मृत्यु के बाद, जिनेवा अकादमी का नेतृत्व उनके उत्तराधिकारी, थियोडोर बेज़ा के हाथों में आ गया। 1519 से 1605 तक, बेज़ा ने कैल्विन के धर्मशास्त्र को स्वीकार किया, लेकिन एक अलग धर्मशास्त्रीय पद्धति का अनुसरण किया। वह प्रोटेस्टेंट विद्वत्तावाद में एक नेता थे, जो लूथर और कैल्विन के समय के बाद आया, एक ऐसा आंदोलन जिसने मैजिस्ट्रियल सुधारकों की तुलना में दार्शनिक धर्मशास्त्र पर अधिक जोर दिया।

बेज़ा की धार्मिक प्रणाली कैल्विन की तुलना में अधिक पूर्ण और मजबूत थी। 16वीं शताब्दी के अंत में जेनेवा अकादमी में एक युवा डच मंत्री पद के उम्मीदवार जैकब आर्मिनियस को यह मजबूत कैल्विनवाद सिखाया गया था। आर्मिनियस और धर्मसभा, चर्च परिषद, चर्च की बैठक और आम सभा अच्छे शब्द हैं, डोर्ट , डोर्ट , डच शहर डोरट्रेक का संक्षिप्त नाम है ।

जैकब आर्मिनियस, 1550 से 1609 तक, थियोडोर बेज़ा के अधीन जिनेवा में धर्मशास्त्र का छात्र था। स्नातक होने के बाद, वह एम्स्टर्डम लौट आया और डच चर्च में पादरी मंत्रालय के लिए एक कॉल स्वीकार कर लिया। मुझे लगता है कि उनका बहुत सम्मान किया जाता था। मेरी समझ से उन्हें एक पादरी के रूप में बहुत सम्मान दिया जाता था जो बाइबल का प्रचार करता था और लोगों से प्यार करता था।

बाद में, उन्होंने लीडेन विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र पढ़ाया, जहाँ उन्हें अपने शिक्षण में सफलता मिली। उन्हें अपने एक सहकर्मी, फ्रांसिस्कस गोमारस , 1563 से 1642 तक की आलोचना का भी सामना करना पड़ा, जो एक मजबूत कैल्विनिस्ट थे, जिन्होंने आर्मिनियस के मोक्ष के सिद्धांत के लिए उनके उद्धार के सिद्धांत पर आपत्ति जताई थी। उन्होंने कुछ समय तक विवाद किया, और फिर गोमारस ने औपचारिक रूप से आर्मिनियस पर डच चर्च के सैद्धांतिक मानकों से विचलन का आरोप लगाया, जो उनके समय में बेल्जिक कन्फेशन और हेडलबर्ग कैटेचिज्म थे।

जवाब में, आर्मिनियस ने अपने विचारों का व्यवस्थित बचाव करते हुए, भावनाओं की घोषणा लिखी। इस पूरी बहस के अंत में, इस ऐतिहासिक आंदोलन के आगे-पीछे और बहस के सिद्धांत, डॉर्ट के धार्मिक घोषणाएँ थीं। और आज, दुनिया भर में, सुधारवादी चर्च, सुधारवादी परंपरा में चर्च, प्रेस्बिटेरियन चर्चों के विपरीत जो स्कॉटलैंड से आते हैं और वेस्टमिंस्टर मानकों, बड़े और छोटे कैटेचिज़्म और वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ़ फेथ का उपयोग करते हैं, सुधारवादी चर्च, हंगरी के सुधारवादी चर्च, दक्षिण अफ्रीका के सुधारवादी चर्च, हर जगह, हर जगह, वे एकता के तीन रूपों का उपयोग करते हैं, जिसमें बेल्जिक कन्फेशन और हेडलबर्ग कैटेचिज़्म के अलावा, डॉर्ट के कैनन शामिल हैं।

लेकिन आर्मिनियस के समय में, डॉर्ट के कोई सिद्धांत नहीं थे। उनके विरोध के कारण, और उनके शिष्यों के विरोध के कारण डॉर्ट के सिद्धांत बने। इस बीच, आर्मिनियस ने खुद औपचारिक प्रतीकों में चर्च के सैद्धांतिक कथनों को जोड़ने के कदम का विरोध किया।

हमारे पास बेल्जिक कन्फेशन और हेडलबर्ग कैटेचिज़्म है। हमें किसी और चीज की जरूरत नहीं है। हमें उनके साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए।

इसलिए, इन चीजों को अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। डच कैल्विनिस्ट पूरी तरह से उससे असहमत थे क्योंकि हालांकि डॉर्ट के कैनन का विवरण बेल्जिक कन्फेशन और हेडलबर्ग कैटेचिज़्म में नहीं था, लेकिन रूपरेखा निश्चित रूप से उस दिशा में थी। आर्मिनियस ने अपने पूर्व शिक्षक बाएज़ के व्यवस्थित धर्मशास्त्र के दृष्टिकोण का अनुसरण किया लेकिन मोक्ष की योजना के संबंध में एक अलग रास्ता बनाया।

कुछ साल पहले मुझे पूर्वनियति या शाश्वत सुरक्षा के विभिन्न दृष्टिकोणों पर एक किताब पढ़कर और दो अलग-अलग अध्यायों और दृष्टिकोणों को समझकर आश्चर्य हुआ था। सुधारवादी अर्मिनियनवाद और वेस्लेयन अर्मिनियनवाद थे। सबसे पहले, मैंने कहा, सुधारवादी अर्मिनियनवाद? यह एक विरोधाभास जैसा लगता है, शब्दों में विरोधाभास।

लेकिन यह सही था। वेस्लेयन अर्मिनियनवाद, जो कि बहुत बाद में विकसित हुआ, बेशक जॉन वेस्ले से आया। सुधारवादी अर्मिनियनवाद का तात्पर्य आर्मिनियस और अर्मिनियन से है, और एक अर्थ में, यह सच है।

डच चर्च में सुधार हुआ था, और इसलिए आर्मिनियस ने आदेशों जैसी चीजों को माना। मैं सीधे उद्धरण नहीं तो संकेत के साथ हाल ही में वेस्लेयन अर्मिनियन धर्मशास्त्र की पुस्तकों का उल्लेख करता हूँ। हम अपने पूर्वज जैकब आर्मिनियस को विश्वास में याद करते हैं, लेकिन वे आदेशों को मानते थे।

क्या वेस्लेयन को आदेशों का पालन करना चाहिए, और वे दुनिया के निर्माण से पहले ईश्वर के आदेशों पर आगे-पीछे जाते हैं? वे थोड़ा आगे-पीछे जाते हैं, और फिर वे कहते हैं, हालाँकि हम आर्मिनियस की शिक्षाओं के लिए उनका बहुत सम्मान करते हैं, लेकिन इसका उत्तर है नहीं, हम आदेशों में विश्वास नहीं करते। खैर, आर्मिनियस ने किया। पूरे डच चर्च ने किया। और हालाँकि,

सामान्य तौर पर, वेस्लेयन परंपरा दंड प्रतिस्थापन में विश्वास नहीं करती है, लेकिन दंड प्रतिस्थापन के दृष्टिकोण के अलावा कुछ प्रकार के सरकारी सिद्धांत और विचारों पर, इसमें कोई संदेह नहीं है, आर्मिनियस दंड प्रतिस्थापन पर कायम रहे।

आर्मिनियनवाद हैं, और आर्मिनियस की परंपरा को एक तरह से सही कहा जा सकता है। शायद इसे उच्च आर्मिनियनवाद कहना बेहतर होगा, लेकिन यह सुधारवादी आर्मिनियनवाद है, जो वेस्लेयन आर्मिनियनवाद के विपरीत है। यह निश्चित रूप से उच्च चर्च और उसके उत्तराधिकारियों के सुधारवादी कैल्विनवाद जैसा नहीं है। आर्मिनियस का प्रसिद्ध लेखन भावनाओं की घोषणा थी।

कार्ल बैंग्स द्वारा लिखी गई आर्मिनियस की जीवनी में, जिसे मैंने बहुत पसंद किया, वह आर्मिनियस के प्रति बहुत सकारात्मक और मैत्रीपूर्ण है, अपने विचारों को सर्वोत्तम संभव प्रकाश में प्रस्तुत करता है, लेकिन कई बार स्वीकार करता है कि वह स्पष्ट नहीं था, वह नहीं था, मैं यह नहीं कहना चाहता कि वह बेईमान था, लेकिन वह नहीं था, मैं यह नहीं कहना चाहता कि वह ईमानदार नहीं था, लेकिन वह स्पष्ट नहीं था। उदाहरण के लिए, बैंग्स ने आर्मिनियस को उद्धृत करते हुए कहा कि कोई भी व्यक्ति जो मसीह में विश्वास करता है, वह अनुग्रह से दूर नहीं हो सकता। और फुटनोट में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि आर्मिनियस यहाँ सीधे नहीं बोल रहे हैं क्योंकि यहाँ मसीह में विश्वास करने वाले के बारे में उनका दृष्टिकोण किसी ऐसे व्यक्ति से है जो मसीह में विश्वास करना जारी रखता है क्योंकि उनका मानना है कि कोई व्यक्ति जो पहले विश्वास करता था, वह विश्वास करना बंद कर सकता है और इस तरह दूर हो सकता है।

खैर, यह एक समस्या है, वास्तव में एक समस्या है। दूसरी ओर, यह सच है कि गोमेरस ने आर्मिनियस के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया था, और मुझे लगता है कि शायद कुछ मजबूत कैल्विनिस्ट भाइयों के हाथों दुर्व्यवहार के कारण उसे जल्दी मौत के घाट उतार दिया गया था। आर्मिनियस ने अपने पूर्व शिक्षक बेज़ा के दृष्टिकोण का अनुसरण किया, जो कि कैल्विन के अधिक बाइबिल दृष्टिकोण के बजाय एक सुधारवादी विद्वत्तावाद है।

क्या यह गलत है, खासकर? नहीं, धर्मशास्त्र विकसित होते हैं, और यह समझ में आता है कि किसी विशेष परंपरा में दूसरी पीढ़ी अपने पिता के विश्वास के विचारों का विस्तार और विकास करेगी। ऑगस्टीन, लूथर और कैल्विन के खिलाफ, आर्मिनियस ने सिखाया कि भगवान ने उन सभी को बचाने की योजना बनाई जिन्हें उसने पहले से देखा था। इस तरह से उसने बाइबल की शिक्षा को समझा कि उसने पहले से देखा था, यानी पहले से जान लिया था, यानी पहले से जान लिया था। भगवान ने उन सभी को बचाने की योजना बनाई जिन्हें उसने पहले से देखा था, पहले से जानता था, जो मसीह में विश्वास करेंगे।

इसका मतलब यह है कि उद्धार के लिए चुनाव ईश्वर की दूरदर्शिता, लोगों के विश्वास को जानने की क्षमता पर निर्भर करता है और उसी के अनुसार होता है। आर्मिनियस ऑगस्टीन और कैल्विन से सहमत थे कि पापियों के पास खुद को बचाने के लिए कुछ भी करने की अक्षमता है। यह एक और जगह है जहाँ आर्मिनियस के धर्मशास्त्र और अर्ध-पेलाजियन किस्म के कई आर्मिनियन धर्मशास्त्रों के बीच अंतर है।

हालाँकि, आर्मिनियस ने यह मानकर आध्यात्मिक अक्षमता को सुधारने का प्रयास किया कि ईश्वर सभी को पूर्ववर्ती, पूर्ववर्ती अनुग्रह देता है। "उद्धार के लिए पर्याप्त अनुग्रह चुने हुए और गैर-चुने हुए लोगों को प्रदान किया जाता है, ताकि वे चाहें तो विश्वास करें या न करें।" ऑगस्टीन और कैल्विन ने सिखाया था कि पूर्ववर्ती अनुग्रह विशेष था, हर किसी को नहीं दिया गया, सार्वभौमिक नहीं था, और प्रभावकारी, प्रभावी था।

लेकिन आर्मिनियस के लिए, यह सार्वभौमिक था और प्रभावकारी नहीं था। वह वेस्ले की लोकप्रिय व्याख्या और सार्वभौमिक पूर्वगामी अनुग्रह की धारणा के प्रकाशन को आर्मिनियन प्रणाली विज्ञान के आधार के रूप में देख रहा था। कैल्विन और बेज़ा का अनुसरण करते हुए, आर्मिनियस ने ईश्वर के पूर्वज्ञान की पुष्टि की, लेकिन जब उन्होंने कहा कि यह कारणात्मक नहीं था, तो वे उनके दृष्टिकोण से अलग हो गए।

"कोई बात इसलिए नहीं होती कि वह पहले से ज्ञात है, बल्कि इसलिए होती है क्योंकि उसका होना अभी बाकी है।" आर्मिनियस के निजी विवाद 28.14, जेम्स निकोल्स द्वारा अनुवादित। आर्मिनियस के अनुसार, मोक्ष में निर्णायक कारक ईश्वर में नहीं, बल्कि मनुष्य में निहित है।

यह ईश्वर की सर्वोच्च कृपा नहीं है, बल्कि मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा है जो अंतर पैदा करती है। हालाँकि मनुष्य की इच्छा स्वाभाविक रूप से भ्रष्ट है और वह अच्छाई का चुनाव नहीं कर सकता, लेकिन ईश्वर की सार्वभौमिक, पूर्वगामी कृपा सभी को मसीह में उद्धारक विश्वास का प्रयोग करने में सक्षम बनाती है, यदि वे चाहें तो। आर्मिनियस के अनुसार, उद्धार में ईश्वर का कार्य यह पूर्वानुमान लगाना है कि पापी स्वतंत्र रूप से क्या चुनते हैं और फिर इस पूर्वज्ञान के आधार पर चुनाव या अस्वीकार करते हैं।

उच्च सुधारवादी पादरियों के बीच आर्मिनियनवाद का विकास हुआ और आर्मिनियस की मृत्यु के कुछ साल बाद एक प्रभावशाली अल्पसंख्यक समूह विकसित हुआ। आर्मिनियनों ने अपने विचारों का व्यवस्थित बचाव किया जिसे रेमोन्स्ट्रेंट्स या विरोध कहा जाता है और प्रदर्शनकारियों को खुद रेमोन्स्ट्रेंट्स कहा जाने लगा। वास्तव में, यह प्रोटेस्टेंट शब्द से बहुत अलग नहीं है, हालाँकि इसका उपयोग यहाँ सुधार से अलग संदर्भ में किया गया है।

उनके विरोध को रेमोन्स्ट्रेंट्स कहा गया, और इन विचारों को प्रचारित करने वाले लोगों को रेमोन्स्ट्रेंट्स कहा गया। रेमोन्स्ट्रेंट्स ने एक रेमोन्स्ट्रेंट्स बनाया। रेमोन्स्ट्रेंट्स में बहस के पाँच बिंदु शामिल थे, और यहाँ उनका क्रम दिया गया है।

पहला है सशर्त चुनाव। दूसरा, सार्वभौमिक प्रायश्चित। तीसरा, पूर्ण भ्रष्टता या निवारक अनुग्रह। चौथा, प्रतिरोध करने योग्य अनुग्रह। पाँचवां, सशर्त दृढ़ता। वास्तव में, वे इस बारे में हठधर्मी नहीं थे, लेकिन यह एक ऐसा मुद्दा था जिस पर आगे बहस की आवश्यकता थी।

पाँच आर्मिनियन बिंदुओं का संक्षिप्त सारांश क्रम में है। सशर्त चुनाव का अर्थ है कि परमेश्वर उद्धार चुनता है; इसमें कोई संदेह नहीं है। बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि परमेश्वर ही चुनावकर्ता है।

वह वही है जो लोगों को उद्धार के लिए चुनता है। आर्मिनियनों ने इस चुनाव को सशर्त, आश्रित, पूर्व-निर्धारित मानवीय विश्वास या उसके अभाव पर आकस्मिक बनाया। सशर्त चुनाव का अर्थ है कि परमेश्वर उद्धार के लिए चुनता है, जो किसी व्यक्ति के विश्वास के बारे में उसके पूर्वज्ञान पर आधारित है।

इसलिए, इफिसियों 1, रोमियों 8, और रोमियों 9 में महान चुनाव अंश, जिन्हें हम देखेंगे, वास्तव में इसका मतलब है कि परमेश्वर अपनी दूरदर्शिता, अपने पूर्वज्ञान, और अपने पहले से जानने के आधार पर चुनता है कि लोग सुसमाचार के साथ क्या करेंगे। यदि वह पहले से ही देख लेता है कि वे विश्वास करेंगे, तो वह उन्हें चुनता है। यदि नहीं, तो वह उन्हें नहीं चुनता।

सार्वभौमिक प्रायश्चित का अर्थ है कि यीशु ने सभी के उद्धार को संभव बनाने के लिए अपनी जान दी। यह कोई प्रभावी प्रायश्चित नहीं है। यह एक संभव प्रायश्चित है।

यह हर किसी के लिए एक प्रायश्चित है जो हर किसी को अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग करने और उद्धार के लिए मसीह में विश्वास करने में सक्षम बनाता है। उद्धार को संभव बनाने के लिए यीशु की मृत्यु हुई। कुछ लोगों ने इसे उद्धार के लिए पुरुषों और महिलाओं और लड़कों और लड़कियों की वास्तविक खरीद के बजाय एक काल्पनिक प्रायश्चित कहा है।

कुल भ्रष्टता का मतलब है कि आदम के पतन और मानवीय पाप के कारण लोग खुद को बचा नहीं सकते। यह कई लोगों को आश्चर्यचकित करता है, और कुछ लोगों ने आर्मिनियनवाद के पाँच बिंदुओं को गलत तरीके से चित्रित किया है, यह कहते हुए कि उन्होंने लोगों को सिखाया कि वे गिरे नहीं बल्कि कुएँ में बहुत नीचे गिरे। सच नहीं है।

उन्होंने ऐसा किया। फिर से, डच चर्च में माहौल में सुधार हुआ। और हेडलबर्ग और बेल्जियन कन्फेशन के अनुसार, हम खुद को बचाने में असमर्थ हैं।

इसलिए, आर्मिनियन और रिफॉर्म कुल अक्षमता पर सहमत हुए। हालाँकि, यह कुल अक्षमता वास्तव में मनुष्यों में मौजूद नहीं है क्योंकि यह संशोधित है। यह सार्वभौमिक पूर्वगामी अनुग्रह द्वारा सुधारा जाता है।

सार्वभौमिक। हर किसी को यह अनुग्रह मिलता है। निवारक अनुग्रह।

यह उद्धार से पहले आता है। एक क्षेत्र, इच्छा में मूल पाप के प्रभावों को निरस्त करना। बंधी हुई इच्छा अब अनुग्रह द्वारा मुक्त हो गई है, जिससे लोग मसीह को चुन सकते हैं और बचाए जा सकते हैं।

सार्वभौमिक निवारक अनुग्रह आदम के मूल पाप के मानवीय इच्छा पर पड़ने वाले प्रभावों को समाप्त कर देता है, ताकि पापियों को विश्वास करने और बचाए जाने की अनुग्रहपूर्ण क्षमता प्राप्त हो। मैं इसे फिर से कहूँगा। सुधारवादी धर्मशास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में कहा गया है कि वे अक्षमता सिखाते हैं।

वेस्लेयन धर्मशास्त्र की पाठ्यपुस्तकें अनुग्रहपूर्ण क्षमता सिखाती हैं। यह कोई प्राकृतिक क्षमता नहीं है। यह अनुग्रह द्वारा सभी को प्रदान की जाती है।

मेरी धर्मशास्त्रीय पद्धति कहती है कि इन कथनों को बाइबल की व्याख्या के आधार पर परखा जाना चाहिए। प्रतिरोधीय अनुग्रह का अर्थ है कि पापी परमेश्वर के अनुग्रह को अस्वीकार कर सकते हैं और करते हैं और नष्ट हो जाते हैं। यह बाइबल में बहुत स्पष्ट है।

लोग परमेश्वर की कृपा का विरोध करते हैं, और वे खो जाते हैं। वे अपने पापों में नाश हो जाते हैं। तो, कृपा का विरोध किया जा सकता है, है न? आर्मिनियन ऐसा सोचते थे।

सुधारवादियों ने सोचा कि उनके विरोधी चीजों को बहुत सरल तरीके से प्रस्तुत कर रहे थे। हाँ, लोग अनुग्रह का विरोध करते हैं और नष्ट हो जाते हैं, लेकिन चुने हुए लोगों में से कोई भी ऐसा नहीं करता क्योंकि परमेश्वर उन्हें सुसमाचार के साथ पकड़ता है और उन्हें हमेशा बचाता है। सशर्त दृढ़ता से संकेत मिलता है कि आर्मिनियन अनिश्चित थे कि क्या विश्वासी अनुग्रह से दूर हो सकते हैं और फिर से खो सकते हैं।

उन्होंने कहा कि शास्त्र में बहुत मजबूत कथन हैं। यूहन्ना 10:28 और 30 में यीशु ने कहा, मैं अपनी भेड़ों को अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नष्ट नहीं होंगी।

पिता के हाथ से नहीं छीन सकता। भेड़ों की रक्षा करने में पिता और मैं एक हैं। और रोमियों 8, उन लोगों के लिए कोई निंदा नहीं है जो मसीह में हैं।

परमेश्वर के चुने हुएों पर कौन आरोप लगाएगा? हमें परमेश्वर के प्रेम से कोई भी अलग नहीं कर सकता। लेकिन वे उन कथनों को इब्रानियों 6 और 10 के द्वारा संतुलित मानते थे, जो स्पष्ट रूप से उन्हें सिखाते थे कि लोग अनुग्रह से दूर हो सकते हैं और खो सकते हैं। हम इन दो विरोधी शिक्षाओं को एक साथ कैसे रखते हैं, यह आगे के चिंतन का विषय है।

इसलिए वे संरक्षण पर धर्मग्रंथ के मजबूत कथन को स्वीकार करते हैं, लेकिन वे इस बात पर बहस करते हैं कि इसे मजबूत धर्मत्याग ग्रंथों के साथ कैसे जोड़ा जाना चाहिए। यहाँ एक और जगह है जहाँ सुधारवादी आर्मिनियनवाद वेस्लेयन आर्मिनियनवाद से असहमत है। वेस्ले ने बाइबल का अध्ययन किया।

उनके पास पूरे पुराने नियम और पूरे नए नियम पर नोट्स हैं। वह जानता है कि वह क्या कर रहा है, लेकिन वह इसे एक पहली या आगे अध्ययन किए जाने वाले विषय के रूप में प्रस्तुत नहीं करता है। बेशक, जैसा कि मैंने पहले कहा, धर्मशास्त्र विकसित हुआ है, और आर्मिनियस का आर्मिनियनवाद, क्षमा करें, वेस्ली का आर्मिनियनवाद बन गया, और उसने प्रश्न चिह्न हटा दिया।

लोग अनुग्रह से दूर हो सकते हैं। उनके अनुमान में इस बारे में कोई सवाल नहीं है। सशर्त दृढ़ता से संकेत मिलता है कि आर्मिनियन अनिश्चित थे।

उनका मानना था कि लोग अनुग्रह से दूर हो सकते हैं और फिर से खो सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह उनके सुधारवादी माहौल का हिस्सा था, और मैं इस तथ्य का सम्मान करता हूँ। हालाँकि यह आम तौर पर ज्ञात नहीं है, लेकिन आर्मिनियनवाद के ये पाँच बिंदु कैल्विनवाद के पाँच बिंदुओं से पहले ऐतिहासिक रूप से प्रख्यापित किए गए थे।

क्या यह सच है? हाँ। क्या यह सच है कि इससे पहले कैल्विनवाद के पाँच सूत्र नहीं बताए गए थे? हाँ। क्या यह सच है कि पहले उन बातों पर कोई विश्वास नहीं था? नहीं, यह सच नहीं है, बेशक।

आर्मिनियन सुधारवादी शिक्षा के खिलाफ़ प्रतिक्रिया कर रहे हैं, लेकिन वे किसी भी तरह के आधिकारिक सैद्धांतिक बयानों में शामिल नहीं थे। जैसा कि मैंने कहा, एकता के तीन रूप केवल एकता के दो रूप थे। और इस पूरी बात से, विवाद, सिद्धांत, शिक्षाएँ, डॉर्ट के आधिकारिक उद्घोषणाएँ सामने आती हैं, जिन्होंने मामलों को इस तरह से व्यक्त किया कि अब इस पर बहस नहीं होगी।

इन पाँच लेखों के विरोध ने कैल्विनिस्ट बहुमत को 1618 में डोरट्रेक में एक चर्च धर्मसभा, आम सभा बुलाने के लिए प्रेरित किया, जिसे डॉर्ट के नाम से भी जाना जाता है। डॉर्ट की धर्मसभा डच चर्च की एक आम सभा थी। चूँकि धर्मसभा चर्च की एक अदालत थी, और इन चीजों की जाँच करने वाली एक खोजी समिति नहीं थी, इसलिए यह एक चर्च अदालत थी।

आर्मिनियनों के विचारों का मूल्यांकन और न्याय करने के लिए बुलाया गया था। जैसा कि धर्मसभा ने विचार-विमर्श किया, इसने डॉर्ट की धर्मसभा के पाँच बिंदुओं को प्रकाशित किया, जो प्रतिवाद के पाँच बिंदुओं का बिंदु-दर-बिंदु जवाब था। पाँच सिद्धांत थे कुल भ्रष्टता, बिना शर्त चुनाव, सीमित प्रायश्चित, अनूठा अनुग्रह, संतों की दृढ़ता।

यहाँ एक संक्षिप्त नाम है, ट्यूलिप, टी का मतलब है कुल भ्रष्टता, यू का मतलब है बिना शर्त चुनाव, एल का मतलब है सीमित प्रायश्चित, आई का मतलब है अप्रतिरोध्य अनुग्रह, पी का मतलब है संतों की दृढ़ता। वास्तव में, यह निर्धारित करना बहुत कठिन है कि यह संक्षिप्त नाम वास्तव में कहाँ से आया है। वैसे, उन्होंने इसे अंग्रेजी में नहीं लिखा।

उन्होंने डच भाषा में लिखा, बेशक, शायद लैटिन और डच में। यह जानना बहुत मुश्किल है कि ऐतिहासिक रूप से यह कहाँ से आया। यह एक समस्या है।

मेरे चर्च इतिहासकार मित्रों ने, जहाँ तक मेरी जानकारी है, अभी तक इसका समाधान नहीं किया है। ये विचार स्पष्ट रूप से डॉर्ट के कैल्विनिस्टों के हैं। इन पाँच बिंदुओं का सारांश देना उचित है।

कैल्विनिस्ट आर्मिनियन से सहमत थे कि पापी खुद को नहीं बचा सकते, लेकिन कैल्विनिस्ट ने सार्वभौमिक, पूर्वगामी अनुग्रह की आर्मिनियन अवधारणा को अस्वीकार कर दिया। वे पूर्ण भ्रष्टता पर सहमत थे, जिसका अर्थ दो बातें हैं। इसका अर्थ है, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पापी खुद को बचाने में असमर्थ हैं।



इसका यह भी अर्थ है कि रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्र के विरुद्ध, कुल भ्रष्टता का अर्थ यह नहीं है कि पापी उतने ही बुरे हैं जितने वे हो सकते हैं। यदि ऐसा होता, तो पृथ्वी पर मानव जीवन असंभव होता। और बाद में, सुधारवादी धर्मशास्त्र ने कहा कि जिसे वे सामान्य अनुग्रह कहते हैं, वह सभी मनुष्यों के प्रति ईश्वर की भलाई है, जिसमें सरकार और समाज और पुलिस बल आदि की संरचनाएँ शामिल हैं, ताकि मनुष्य स्वयं को नष्ट न करें।

लेकिन वे आर्मिनियन से असहमत थे। हाँ, रोम ने धर्मशास्त्र पढ़ाया, मनुष्य के पतन के प्रभाव को, सिवाय इसके कि मन को पतन के प्रभावों से कुछ हद तक मुक्त रखा गया था। सुधारकों ने कहा कि यह गलत है, और डोरडियन कैल्विनिस्टों ने भी कहा कि यह गलत है।

गलत। पौलुस मानव मन पर पाप के प्रभावों पर ज़ोर देता है। हे भगवान।

रोमियों 1 और कई अन्य स्थानों पर। पूरा मानव पापी है। कुल भ्रष्टता का मतलब यह नहीं है कि लोग उतने बुरे हैं जितने वे हो सकते हैं, बल्कि यह है कि पूरा मानव अपने सभी संकायों में पाप से प्रभावित है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम खुद को बचाने में असमर्थ हैं।

इसके अलावा, सार्वभौमिक पूर्वगामी अनुग्रह की यह धारणा, हालांकि यह एक धार्मिक उत्कृष्ट कृति है, एक बाइबिल कथा है। इसमें कोई अनुग्रहकारी क्षमता नहीं है, बल्कि अक्षमता है। बिना शर्त चुनाव का मतलब है कि चुनाव का आधार स्वयं ईश्वर में है, मनुष्यों में किसी भी चीज़ में नहीं।

कैल्विनवाद के पाँच बिंदुओं को सही ढंग से समझने वाले किसी व्यक्ति के रूप में, मैं इन शीर्षकों पर कराहता हूँ। कुल भ्रष्टता से ऐसा लगता है कि हर कोई बाल उत्पीड़क है। बिना शर्त चुनाव से ऐसा लगता है कि चुनाव के लिए कोई तुक या कारण नहीं है।

बेशक, पाँच कैल्विनिस्ट बिंदुओं को आर्मिनियन बिंदुओं के प्रतिवाद के रूप में पढ़ा जाना चाहिए। चुनाव बिना शर्त है, ऐसा नहीं है कि ईश्वर में इसके लिए कोई तुक या कारण नहीं है, लेकिन यह आर्मिनियन दृष्टिकोण के विरुद्ध है कि यह सशर्त है। मेरी अपनी समझ, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, यह है कि चुनाव ईश्वर के अपने चरित्र, विशेष रूप से उसके प्रेम और उसकी इच्छा से निर्धारित होता है।

उससे आगे जाने की कोशिश करना असंभव है। मेरे अनुमान में, 2 तीमुथियुस 1:9 इसका सबसे संक्षिप्त सारांश है। इफिसियों 1, रोमियों 8, और रोमियों 9 जाने के लिए सबसे अच्छे स्थान हैं, लेकिन 2 तीमुथियुस 1:9, परमेश्वर ने हमें बचाया और हमें पवित्र बुलाहट के लिए बुलाया, हमारे कार्यों के कारण नहीं, बल्कि अपने स्वयं के उद्देश्य और अनुग्रह के कारण, जो उसने हमें मसीह यीशु में, शाब्दिक अनुवाद, अनन्त युगों से पहले दिया था।

मुझे इस समय ESV भी पसंद नहीं है। परमेश्वर का उद्देश्य, यही उसकी इच्छा और उसकी कृपा है, यही उसका प्रेम है। अगर हम इसे जितना हो सके उतना पीछे धकेलते हैं, तो मैं क्यों बचा रहूँगा? मैं सुसमाचार में विश्वास करता था।

क्या यह अंतिम कथन है? नहीं। यीशु मेरे पापों के लिए मरा। मैं इसी बात पर विश्वास करता था, ताकि बचा जा सके।

क्या यह अंतिम कथन है? मैंने एक कथन छोड़ दिया। मैं सुसमाचार में विश्वास करता हूँ। क्या यह अंतिम कथन है? नहीं।

पवित्र आत्मा ने मेरा हृदय खोल दिया। क्या यही परम सत्य है? नहीं। यीशु ने मुझे बचाने के लिए अपनी जान दी और फिर से जी उठे, और यही सुसमाचार है, यही विश्वास है जो बचाता है।

क्या यह अंतिम कथन है? नहीं। रहस्यमय रूप से, अंतिम कथन यह है कि परमेश्वर ने हमें संसार के निर्माण से पहले मसीह में चुना था। इसके बारे में और वे बातें कैसे संबंधित हैं, इसके बारे में बाद में और अधिक जानकारी दी जाएगी, लेकिन ये चारों बातें सत्य हैं।

सीमित या निश्चित या विशेष प्रायश्चित का अर्थ है कि यद्यपि कूस से सार्वभौमिक लाभ प्राप्त होते हैं, यीशु ने चुने हुए लोगों को बचाने के लिए अपनी जान दी, न कि प्रत्येक व्यक्ति को। सीमित प्रायश्चित से ऐसा लगता है कि मसीह के कार्य में कुछ कमी है। मैंने बहुत अधिक हांफना कर लिया है, इसलिए मैं फिर से हांफना नहीं चाहूंगा, लेकिन हां, शायद हांफना उचित है।

प्रायश्चित कुछ मायनों में सार्वभौमिक है, बेशक। यह सुसमाचार की सार्वभौमिक मुफ्त पेशकश को आधार बनाता है और इससे हर व्यक्ति को लाभ मिलता है, लेकिन उद्धार, परमेश्वर का उद्धारक इरादा उसके लोगों तक सीमित है, जिन्हें पिता ने चुना, पुत्र ने छोड़ा, और वे लोग, और वे लोग जिन्हें आत्मा मसीह के पास लाने के लिए काम करती है। यीशु केवल उद्धार को संभव नहीं बनाता है, बल्कि जैसा कि रहस्योद्घाटन 5 कहता है, आपकी मृत्यु से, हे परमेश्वर के मेरे, आपने खरीदा, वास्तव में यह ग्रीक में ब्लाइक है, यह एक विभाजनकारी जनन है, आपने लोगों और राष्ट्र की हर जनजाति और भाषा से खरीदा है।

हर अनुवाद में कुछ, या लोग, या विश्वासी, या मनुष्य कहा गया है। आपको वहाँ एक शब्द जोड़ना होगा। यानी, हर जनजाति, भाषा, लोग और राष्ट्र जो बाइबिल के अनुसार दुनिया का प्रतिनिधित्व करते हैं, अगर आप चाहें तो, वह बड़ा वृत्त है जिसका वह राशि जो उसने खरीदी है वह उपसमूह है।

यह कोई संभावित या काल्पनिक या सार्वभौमिक प्रायश्चित नहीं है। ओह, यह सार्वभौमिक है इस अर्थ में कि उसने हर देश, हर जनसमूह, हर भाषा और बोली, हर जगह से कुछ खरीदा, लेकिन उसने उन्हें अपनी मृत्यु से खरीदा। क्या मैं ऐसा लग रहा हूँ कि मैं पक्षपाती हूँ? मैं पक्षपाती हूँ।

सीमित या निश्चित या विशेष प्रायश्चित का अर्थ है कि मसीह उद्धार को संभव या काल्पनिक बनाने के लिए नहीं मरा, बल्कि वास्तव में अपने लोगों को उनके पापों से बचाने के लिए मरा, अन्यथा वे बचाए नहीं जा सकते थे। अप्रतिरोध्य अनुग्रह इस बात से इनकार नहीं करता कि पापी सफलतापूर्वक, उद्धारण चिह्नों में, मृत्यु तक परमेश्वर के बचाने वाले अनुग्रह का विरोध करते हैं, लेकिन यह कि चुने हुए लोगों में से कोई भी ऐसा नहीं करता है। परमेश्वर स्वर्ग का पवित्र शिकारी

कुत्ता है जो अपने पति को प्राप्त करता है, उसे अपनी स्त्री मिलती है, वह हमारे साथ तब तक बना रहता है जब तक हम उसके पुत्र पर विश्वास नहीं करते।

बेशक, उनके अनुग्रह का विरोध उन लोगों द्वारा किया जाता है जो अपने पापों में नाश हो जाते हैं, लेकिन पिता द्वारा पुत्र को दिए गए लोगों में से कोई भी मृत्यु तक उसके प्रेम और प्रेमपूर्ण अपील का विरोध नहीं करता। क्योंकि पिता ने उन्हें पुत्र को दिया, यूहन्ना 6। पिता उन्हें पुत्र के पास खींचता है, यूहन्ना 6। वे उसी अध्याय में पुत्र के पास आते हैं, और वे उस पर विश्वास करते हैं। यीशु उन्हें अनंत जीवन देता है, उन्हें रखता है, उन्हें सुरक्षित रखता है, और अंतिम दिन उन्हें जीवित करेगा।

संतों की दृढ़ता का अर्थ है कि ईश्वर उनके साथ दृढ़ता से रहता है, वह उन्हें अंत तक सुरक्षित रखता है, और वे विश्वास में दृढ़ रहते हैं। सच्चे विश्वासी, जैसा कि सेंट ऑगस्टीन ने कहा, ऐसा पूरी तरह से नहीं करते हैं। मुझे उनके कुछ क्रियाविशेषणों की कमी महसूस हो रही है।

पूरी तरह से और लगातार नहीं, लेकिन वे आगे बढ़ते रहते हैं, और कभी-कभी अगर वे गिर भी जाते हैं, तो वे उठते हैं, खुद को धूल चटाते हैं, और ईश्वर की कृपा से आगे बढ़ते रहते हैं। वे गिर सकते हैं, यहाँ मेरी भाषा है, वे गिर सकते हैं, ऑगस्टीन ने कहा, लेकिन पूरी तरह से और अंत में नहीं। दूसरे शब्दों में, वे आंशिक रूप से और अस्थायी रूप से गिर सकते हैं, लेकिन ईश्वर अपनी कृपा से उन्हें अंत तक ऐसा नहीं करने देंगे।

एक पादरी के रूप में, और यहां तक कि पादरियों को प्रशिक्षित करने वाले एक प्रोफेसर के रूप में भी, धर्मशास्त्र को जीवन में लागू करना कठिन है, और हम निश्चित रूप से हमेशा चीजों को सरल काले और सफेद रंगों में नहीं देख सकते हैं। वहाँ बहुत सारे धूसर रंग हैं, और पादरी को बाइबल की सच्चाई को जीवन में सफलतापूर्वक लागू करने के लिए बहुत सारी बुद्धि और पवित्र आत्मा की आवश्यकता होती है, लेकिन हमें उस सच्चाई को समझने की कोशिश करने की ज़रूरत है, और हमें इसे वास्तव में जीवन में लागू करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने की ज़रूरत है। दृढ़ता का मतलब यह भी है कि विश्वासी केवल मसीह में विश्वास का दावा नहीं करते हैं बल्कि अंत तक विश्वास करना जारी रखते हैं।

आज, हम इन पाँच सिद्धांतों को कैल्विनवाद के पाँच बिंदुओं के रूप में पहचानते हैं। नाम के बावजूद, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पाँच बिंदु 16वीं शताब्दी में जॉन कैल्विन से नहीं आए थे, बल्कि 17वीं शताब्दी में हॉलैंड में डॉर्ट की धर्मसभा से आए थे। वे प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। इसके अलावा, वे कैल्विनवाद की पूरी प्रस्तुति का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं, जिसमें पाँच बिंदुओं के अलावा बहुत सारे सत्य हैं।

वास्तव में, उन्हें सुधारवादी आस्था का सार और सार मानना गलत है। डॉर्ट के पाँच सिद्धांत डच कैल्विनिस्ट द्वारा अर्मेनियाई प्रतिवाद का खंडन दर्शाते हैं। मान लीजिए कि आप किसी विशेष राजनीतिक विचारधारा के हैं।

क्या आपके विचारों के सार को आपके विरोधी द्वारा आपके रुख पर किए गए हमले का खंडन कहना उचित होगा? मुझे ऐसा नहीं लगता। नहीं, यह आपकी प्रस्तुति का हिस्सा होगा, लेकिन

फिर आपको अपने विचारों को सकारात्मक प्रकाश में प्रस्तुत करने का अधिकार है, और इस संबंध में, सुधारवादी विश्वास कैल्विनवाद के पाँच बिंदुओं से कहीं अधिक बड़ा है। उन्हें प्रचारित करके, डच सुधारवादी चर्च ने आधिकारिक तौर पर ऑगस्टीन और कैल्विन के पूर्वनियति के दृष्टिकोण को स्वीकार करने की पुष्टि की और सुधारवादी स्वीकारोक्ति की आर्मिनियस की व्याख्या को सीमा से बाहर माना।

डॉर्ट की धर्मसभा के सिद्धांतों को बेल्जिक कन्फेशन और हेडलबर्ग कैटेचिज्म में जोड़ा गया ताकि एकता के तीन रूप बन सकें। हॉलैंड में सुधारित चर्चों और दुनिया भर के सुधारित चर्चों के सैद्धांतिक मानक। हम चार्ल्स हैडन स्पर्जन और हाइपरिस्ट्स, उनके शब्दों को देखते हुए ऐतिहासिक विचारों की अपनी टोही समाप्त करेंगे।

चार्ल्स हैडन स्पर्जन, 1834 से 1892 तक, एक ग्रामीण कांग्रेसनलिस्ट चर्च में पले-बढ़े, जो मूल रूप से कैल्विनवाद का समर्थन करता था, और असाधारण प्रचार क्षमता दिखाता था। 20 साल की उम्र में, उन्हें एक विशेष बैपटिस्ट के रूप में नियुक्त किया गया और कुछ साल बाद उन्हें लंदन के न्यू पार्क स्ट्रीट चर्च में बुलाया गया। जैसे ही वे वहाँ पहुँचे, उन्हें हाइपरिज्म, कैल्विनवाद के एक चरम रूप के साथ विवाद में घसीटा गया।

मैं कह सकता हूँ कि स्पर्जन ने खुद ही शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने धर्मशास्त्रीय सेमिनरी, एक धर्मशास्त्रीय कॉलेज में जाने का प्रयास किया, लेकिन ईश्वर की कृपा से, वे एक कमरे में गए, और डीन दूसरे कमरे में गए, और दोनों कभी एक साथ नहीं मिले। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि प्रभु नहीं चाहते थे कि वे स्कूल जाएँ और उन्होंने खुद ही शिक्षा प्राप्त की।

स्वयं-शिक्षित प्रतिभाशाली होने से उन्हें बहुत ज़्यादा नुकसान नहीं हुआ, और आश्चर्यजनक रूप से, आज भी दुनिया भर में उनके उपदेशों का सम्मान किया जाता है और उन्हें उद्धृत किया जाता है। मेरा अपना पादरी, मैं कहूँगा, कम से कम हर दूसरे उपदेश में उन्हें उद्धृत करता है। उनके पास बाइबल की बहुत अच्छी अंतर्दृष्टि थी।

उन्होंने मुख्य विषयों पर जोर दिया, गौण विषयों पर कम जोर दिया, और परमेश्वर के लोगों पर परमेश्वर के सत्य को लागू करने की अद्भुत क्षमता थी, जिसकी शुरुआत उन्होंने खुद से की। हे भगवान। वह 20 के दशक की शुरुआत में थे।

लंदन के पादरी एक व्यक्ति के लिए कैल्विनिस्ट थे, आम तौर पर कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट, और वे उसके पिता जितने बूढ़े थे। फिर भी, उन्होंने जो सिखाया वह गलत था। यह अति-कैल्विनवाद था, और एक युवा के रूप में, उसने उनका विरोध किया, द्वेष के साथ नहीं।

चर्च के अखबारों में छपने वाली बातें आम बात थीं। उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने वहाँ किसी बहस में हिस्सा नहीं लिया।

उन्होंने यह काम मंच से किया। उन्होंने इसे सम्मान के साथ किया। उन्होंने इसे दृढ़ता से किया और अंततः उन्होंने लड़ाई जीत ली, जो अविश्वसनीय था।

यहाँ पाँच मुख्य बिंदु दिए गए हैं। वैसे, उनमें से पाँच अतिवाद के नहीं हैं। पहला, परमेश्वर चुने हुए लोगों से प्रेम करता है, गैर-चुने हुए लोगों से नहीं।

दूसरा, कोई सार्वभौमिक सुसमाचार आह्वान नहीं है, केवल चुने हुए लोगों के लिए एक प्रभावकारी आह्वान है। आप सुसमाचार का अंधाधुंध प्रचार नहीं करते, जैसा कि डॉर्ट ने कहा। डॉर्ट के सिद्धांतों में कहा गया है कि आपको सुसमाचार का प्रचार बेतरतीब ढंग से करना चाहिए।

बेवजह। तुम्हें यह कैसा लगा? अरे, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। तुम सिर्फ चुने हुए लोगों को ही सुसमाचार सुनाते हो।

स्पर्जन बहुत रंगीन हैं। वे कहते हैं कि हम नहीं जानते कि चुने हुए लोग कौन हैं। हम पुरुषों के पास जाकर उनकी पैट के पीछे से शर्ट नहीं खींच सकते और उस पर चुने हुए लोगों के लिए E नहीं ढूँढ सकते।

हम बिना किसी भेदभाव के सुसमाचार का प्रचार करते हैं, और परमेश्वर अपने लोगों को अपनी ओर खींचता है। पवित्र आत्मा वचन के प्रचार के माध्यम से ऐसा करता है। अविश्वास कोई पाप नहीं है।

हांफना। क्षमा करें, मैं हांफने से खुद को नहीं रोक सका। अविश्वास कोई पाप नहीं है, क्योंकि गैर-चुने हुए लोग संभवतः विश्वास नहीं कर सकते।

बाइबल अविश्वास को पाप मानती है। जो भी विचार इस कैल्विनवाद को स्वीकार नहीं करते, वे ईसाई नहीं हैं। दुख की बात है कि मैंने अति-कैल्विनवादी वेबसाइटें देखी हैं जो इसी व्यवसाय की पुष्टि करती हैं।

यह इस प्रकार होता है। आप बाइबल और उसके मजबूत कथनों से शुरू करते हैं, इस मामले में कैल्विनिस्ट सोटेरिओलॉजी, उद्धार के सुधारित सिद्धांत के बारे में, और फिर आप उन्हें ऊंचा उठाते हैं और अन्य बाइबल कथनों को कम करते हैं जो प्रार्थना की प्रभावकारिता, पापियों को बचाने के लिए ईश्वर की इच्छा, और सुसमाचार को व्यापक और व्यापक रूप से प्रकाशित करना आदि सिखाते हैं। आप बाइबल का इस्तेमाल खुद के खिलाफ करते हैं।

यह एक पूरी तरह से गलत धार्मिक पद्धति है। यह कैल्विनवादी प्रणाली ईश्वरीय एजेंसी रखती है जो किसी भी मानवीय एजेंसी को पूरी तरह से दबा देती है। यही कारण है कि स्पर्जन ने इसे हाइपरिज्म और इसके समर्थकों को हाइपरिस्ट कहा।

इस समय से, इसे हाइपर-कैल्विनवाद के रूप में जाना जाने लगा, जो दुर्भाग्य से हमारे दिनों में भी जीवित है। जेम्स वेल्स, एक हाइपरिस्ट नेता ने स्पर्जन की तीखी निंदा की, विशेष रूप से बैपटिस्ट पत्रिकाओं में। स्पर्जन ने कई विश्वासियों को निराश किया जब उन्होंने उपदेशों को छोड़कर इन हमलों का जवाब नहीं दिया।

मैं न केवल उनकी धार्मिक बुद्धिमत्ता, बल्कि उनकी धर्मोपदेशात्मक क्षमता, जो प्रथम श्रेणी की है, बल्कि उनकी राजनीतिक बुद्धिमत्ता, यदि आप चाहें तो, सार्वजनिक रूप से, उनके नीचे न गिरने के कारण भी आश्चर्यचकित हूँ। वह उनके मुकाबले में थे, लेकिन उन्होंने साथी विश्वासियों के सार्वजनिक अपमान के लिए इतना नीचे नहीं गिरा। सबसे पहले, स्पर्जन ने कहा, अपने चुने हुए लोगों के लिए परमेश्वर का सर्वोच्च प्रेम।

ईश्वर का सभी मनुष्यों के प्रति सामान्य प्रेम है, लेकिन अपने लोगों के प्रति विशेष संप्रभु प्रेम है। दूसरा, हाइपरिस्ट के विपरीत दावों के बावजूद, सुसमाचार का आह्वान सार्वभौमिक है। स्पर्जन ने कहा कि हाइपरिस्ट, उद्धरण, इच्छा का पालन करने के लिए बहुत रूढ़िवादी हैं।

वे पहले यह समझना चाहते हैं कि भोज में आने के लिए किसे नियुक्त किया गया है, और फिर वे उन्हें आमंत्रित करेंगे। हा हा, स्वामी ने उन्हें राजमार्गों और सड़कों पर भेजा, और सभी को अंदर आने के लिए आमंत्रित किया। और वास्तव में, बाद में कहा गया, बहुतों को बुलाया जाता है, लेकिन कुछ ही चुने जाते हैं।

यह दूसरी तरह नहीं है। बहुत से लोग चुने गए हैं, इसलिए हम ही हैं, कुछ लोग चुने गए हैं, इसलिए हम केवल कुछ लोगों को आमंत्रित करते हैं। नहीं, हम भगवान नहीं हैं।

हम उसकी भूमिकाएँ नहीं लेते। हे भगवान। तीसरा, मसीह जो कोई भी चाहे उसे अपने पास आने के लिए आमंत्रित करता है।

इसका मतलब यह है कि जो लोग उसे अस्वीकार करते हैं, वे खुद पर निंदा लाते हैं। स्पर्जन की शिक्षा मूल नहीं थी, बल्कि ऑगस्टीन और कैल्विन द्वारा सिखाए गए पूर्वनियति पर ऐतिहासिक विचारों का पुनर्कथन था, और 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ग्रेट ब्रिटेन के लिए खूबसूरती से लोकप्रिय हुआ। आंशिक रूप से स्पर्जन की ईसाई गवाही और वचन के प्रचारक के रूप में उत्कृष्टता के कारण, पारंपरिक कैल्विनवाद को अंततः इंग्लैंड में विशेष बैपटिस्टों के बीच हाइपरिज्म की तुलना में व्यापक स्वीकृति मिली।

वास्तव में, हाइपरिस्ट एक स्थापित अल्पसंख्यक बन गए। लेकिन 19वीं सदी के अंत तक, अंग्रेजी इंजीलवादियों के बीच कैल्विनवाद को आर्मिनियनवाद ने पीछे छोड़ दिया था। हालाँकि, इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि अब कोई भी पार्टी दूसरे के बारे में चिंतित नहीं थी, क्योंकि दोनों ही एक नए तीसरे पक्ष के साथ व्यस्त थे जो उन दोनों से आगे निकल रहा था, धार्मिक उदारवाद, जिसे चुनाव सहित किसी भी रूढ़िवादी सिद्धांतों की कोई चिंता नहीं थी।

शायद मैं अगले व्याख्यान में स्पर्जन के विचारों की संक्षिप्त समीक्षा करूँगा क्योंकि वे बहुत अच्छे हैं। लेकिन फिर हम व्यवस्थित सूत्रों के संदर्भ में चुनाव का अध्ययन करना शुरू करेंगे, यानी चुनाव के सिद्धांत का व्यवस्थित धर्मशास्त्र।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन और मोक्ष पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 5 है, चुनाव, ऐतिहासिक पुनर्ज्ञान।